International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के काव्य में विद्रोही स्वर

अशोक कुमार धाकड़

नेट- हिंदी

ग्राम पोस्ट गोपालपुरा रावतभाटा चितौड़गढ़

राजस्थान- 323304

सारांश

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का व्यक्तित्व अत्यंत विशिष्ट और क्रांतिकारी माना जाता है। वे केवल छायावादी कवि नहीं थे, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के समर्थक, रूढ़ियों के विरोधी तथा मानवीय मूल्यों के सशक्त प्रवक्ता भी थे। उनके काव्य में विद्रोह का स्वर अनेक स्तरों पर अभिव्यक्त हुआ है। उन्होंने सामाजिक विषमता, आर्थिक शोषण, जातिगत भेदभाव, धार्मिक पाखंड, नारी-असमानता तथा साहित्यिक रूढ़ियों के विरुद्ध अपनी लेखनी के माध्यम से प्रभावशाली प्रतिरोध दर्ज कराया। निराला का विद्रोह नकारात्मक या विध्वंसकारी नहीं है, बल्कि वह मानव-मुक्ति, सामाजिक न्याय और नवीन जीवन-मूल्यों की स्थापना का रचनात्मक प्रयास है। प्रस्तुत शोध-पत्र में निराला के काव्य में विद्यमान विद्रोही चेतना का सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय एवं साहित्यिक संदर्भों में विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द: निराला, विद्रोह, सामाजिक चेतना, छायावाद, प्रगतिशीलता, मानवीय मूल्य।

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के इतिहास में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का नाम एक ऐसे कवि के रूप में स्मरण किया जाता है, जिन्होंने कविता को केवल सौंदर्य-अनुभूति का माध्यम न मानकर उसे सामाजिक परिवर्तन का सशक्त उपकरण बनाया। उनका संपूर्ण जीवन अभाव, संघर्ष और विषम परिस्थितियों से भरा रहा। व्यक्तिगत जीवन की कठिनाइयों ने उन्हें समाज के उपेक्षित और शोषित वर्ग के दुख-दर्द के निकट पहुँचाया। यही कारण है कि उनकी कविता में करुणा और विद्रोह दोनों का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। निराला ऐसे समय में साहित्य के क्षेत्र में आए जब भारतीय समाज राजनीतिक दासता, सामाजिक रूढ़ियों और आर्थिक विषमताओं से जूझ रहा था। अंग्रेज़ी शासन के दमन, सामंती व्यवस्था के अत्याचार, जातिगत भेदभाव और स्त्रियों की दयनीय स्थिति ने संवेदनशील साहित्यकारों को गहराई से प्रभावित किया। निराला ने इन परिस्थितियों को केवल देखा ही

नहीं, बल्कि अपनी कविताओं के माध्यम से इनके विरुद्ध निर्भीक स्वर भी उठाया। उनकी रचनाओं में विद्रोह किसी व्यक्तिगत असंतोष का परिणाम नहीं है, बल्कि वह सामाजिक अन्याय और मानवीय पीड़ा के विरुद्ध जागृत चेतना का स्वर है।

निराला ने साहित्यिक क्षेत्र में भी परंपरागत मान्यताओं को चुनौती दी। उन्होंने मुक्तछंद को प्रतिष्ठित किया, भाषा को कृत्रिम अलंकारों से मुक्त कर जनजीवन के निकट लाया तथा कविता के विषयों को राजमहलों और कल्पनालोक से निकालकर श्रमिकों, किसानों, भिखारियों और दलितों के जीवन से जोड़ा। इस प्रकार वे आधुनिक हिंदी कविता के ऐसे कवि सिद्ध हुए जिनकी रचनाओं में विद्रोह और मानवीय संवेदना एक-दूसरे के पूरक बनकर उभरते हैं।

निराला का व्यक्तित्व एवं विद्रोही चेतना

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म 21 फरवरी 1896 को बंगाल के महिषादल राज्य में हुआ। उनका प्रारंभिक जीवन अनेक पारिवारिक और आर्थिक कठिनाइयों से घिरा रहा। अल्पायु में माता का निधन, युवावस्था में पत्नी की मृत्यु, पुत्री सरोज का असमय देहांत तथा जीवन भर आर्थिक अभावों का सामना करने के कारण उनके व्यक्तित्व में गहरी संवेदनशीलता और संघर्षशीलता का विकास हुआ। यही जीवनानुभव आगे चलकर उनके काव्य की आधारभूमि बने। निराला का विद्रोह केवल सामाजिक परिस्थितियों तक सीमित नहीं था। उन्होंने मानसिक दासता, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता तथा साहित्यिक जड़ता का भी विरोध किया। वे मानते थे कि साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं, बल्कि समाज को जागृत करना भी है। इसलिए उनकी कविता में अन्याय के प्रति आक्रोश, पीड़ितों के प्रति सहानुभूति तथा परिवर्तन की तीव्र आकांक्षा स्पष्ट दिखाई देती है। उनकी प्रसिद्ध कविता **'वह तोड़ती पत्थर'** इस विद्रोही चेतना का उत्कृष्ट उदाहरण है। इलाहाबाद की सड़क पर पत्थर तोड़ती एक श्रमिक स्त्री का चित्रण करते हुए निराला केवल उसकी कठिन श्रम-साधना का वर्णन नहीं करते, बल्कि उस सामाजिक व्यवस्था पर प्रश्न उठाते हैं जिसमें एक महिला को जीवन-निर्वाह के लिए इतनी कठोर परिस्थितियों में कार्य करना पड़ता है। यह कविता शोषण के विरुद्ध मौन किंतु अत्यंत प्रभावशाली प्रतिरोध का स्वर बन जाती है।

निराला के काव्य में सामाजिक विद्रोह

निराला के काव्य का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष उनका सामाजिक विद्रोह है। उन्होंने समाज में व्याप्त असमानताओं को अत्यंत निकट से देखा और अनुभव किया था। इसलिए उनकी कविता में गरीब, मजदूर, किसान, भिखारी और दलित वर्ग केवल पात्र नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता के प्रतीक बनकर सामने आते हैं। निराला ने इन वर्गों की पीड़ा को करुणा के साथ-साथ संघर्ष की चेतना से भी जोड़ा है। उनकी प्रसिद्ध कविता 'भिक्षुक' भारतीय समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता का मार्मिक चित्र प्रस्तुत करती है। इस कविता में भूख से विवश मनुष्य का चित्र केवल दया उत्पन्न करने के लिए नहीं है, बल्कि यह उस सामाजिक व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न है जहाँ एक ओर अपार संपत्ति है और दूसरी ओर मनुष्य भोजन के एक कौर के लिए भटकने को विवश है। निराला इस असमानता को मानवीय गरिमा के विरुद्ध मानते हैं और अपनी कविता के माध्यम से उसका विरोध करते हैं।

इसी प्रकार 'कुकुरमुत्ता' कविता में उन्होंने पूँजीवादी और अभिजात्य मानसिकता पर तीखा व्यंग्य किया है। साधारण प्रतीत होने वाले कुकुरमुत्ते को प्रतीक बनाकर उन्होंने यह स्पष्ट किया कि समाज में वास्तविक जीवन-शक्ति उन्हीं लोगों में है जिन्हें तथाकथित उच्च वर्ग तुच्छ समझता है। इस प्रकार उनकी कविता सामाजिक समानता और लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना का संदेश देती है।

निराला के काव्य में धार्मिक रूढ़ियों के विरुद्ध विद्रोह

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का विद्रोह केवल सामाजिक और आर्थिक विषमताओं तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने धार्मिक रूढ़ियों, कर्मकांडों और अंधविश्वासों के विरुद्ध भी सशक्त स्वर उठाया। वे धर्म के विरोधी नहीं थे, बल्कि धर्म के नाम पर किए जाने वाले शोषण, पाखंड और बाह्य आडंबर के विरोधी थे। उनका मानना था कि धर्म का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य को मानवता, करुणा और सत्य की ओर ले जाना है, न कि उसे जाति, वर्ग अथवा संप्रदाय के आधार पर विभाजित करना। उनकी रचनाओं में अनेक स्थानों पर यह भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है कि यदि धर्म मनुष्य की स्वतंत्रता और समानता में बाधक बनता है, तो उसका विरोध आवश्यक है।

निराला ने भारतीय समाज में व्याप्त रूढ़िवादी धार्मिक मानसिकता पर व्यंग्य करते हुए यह संकेत किया कि धर्म का वास्तविक स्वरूप सेवा, प्रेम और सहिष्णुता में निहित है। उन्होंने अपने साहित्य में ऐसे पात्रों और परिस्थितियों का चित्रण किया है, जिनसे यह स्पष्ट होता है कि मनुष्य की गरिमा किसी भी धार्मिक कर्मकांड से अधिक महत्त्वपूर्ण है। यही कारण है कि उनके साहित्य में मानवतावाद की भावना विद्रोह का आधार बन जाती है।

जातिगत असमानता और सामाजिक विषमता के विरुद्ध विद्रोह

भारतीय समाज में सदियों से व्याप्त जातिगत भेदभाव और ऊँच-नीच की व्यवस्था को निराला ने मानवता के लिए सबसे बड़ी बाधा माना। उन्होंने समाज के उपेक्षित वर्गों के प्रति गहरी सहानुभूति व्यक्त करते हुए उनके सम्मान और अधिकारों की वकालत की। उनके काव्य में दलित, मजदूर, किसान और निर्धन व्यक्ति किसी दया के पात्र नहीं हैं, बल्कि वे समाज की वास्तविक शक्ति और श्रम-संस्कृति के प्रतीक हैं। निराला के लिए मनुष्य की पहचान उसकी जाति, वंश अथवा सामाजिक प्रतिष्ठा से नहीं, बल्कि उसके कर्म और मानवीय गुणों से होती है। उनकी दृष्टि में सभी मनुष्य समान हैं और किसी भी प्रकार का जातीय भेदभाव सामाजिक प्रगति में बाधक है। यही कारण है कि उनके काव्य में समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व की भावना बार-बार उभरकर सामने आती है। उनका यह दृष्टिकोण भारतीय लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप है और आधुनिक सामाजिक चेतना का आधार भी बनता है।

नारी चेतना और विद्रोही दृष्टि

निराला हिंदी साहित्य के उन विरल कवियों में हैं जिन्होंने नारी को केवल सौंदर्य की वस्तु या प्रेरणा का स्रोत न मानकर उसे एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में प्रतिष्ठित किया। उनके काव्य में नारी संघर्ष, संवेदना, श्रम, त्याग और आत्मसम्मान की प्रतीक

है। उन्होंने उस सामाजिक व्यवस्था का विरोध किया जिसमें स्त्री को पुरुष से निम्न समझा जाता था और उसके अधिकारों की उपेक्षा की जाती थी। उनकी प्रसिद्ध कविता "सरोज-स्मृति" केवल एक पिता की अपनी पुत्री के प्रति संवेदनात्मक श्रद्धांजलि नहीं है, बल्कि उसमें तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों, आर्थिक अभावों और जीवन की विडंबनाओं का भी मार्मिक चित्रण मिलता है। इस रचना में कवि का व्यक्तिगत दुःख व्यापक मानवीय संवेदना का रूप धारण कर लेता है। इसी प्रकार "वह तोड़ती पत्थर" में श्रमिक स्त्री के माध्यम से उन्होंने स्त्री-शक्ति, श्रमशीलता और आत्मसम्मान का जो चित्र प्रस्तुत किया है, वह हिंदी साहित्य में अद्वितीय है। इस प्रकार निराला का नारी-विमर्श विद्रोही चेतना से जुड़कर सामाजिक परिवर्तन का संदेश देता है।

राष्ट्रीय चेतना और विद्रोह

निराला का काव्य राष्ट्रीय चेतना से भी ओत-प्रोत है। वे ऐसे समय में साहित्य-सृजन कर रहे थे जब भारत स्वतंत्रता आंदोलन के दौर से गुजर रहा था। अंग्रेज़ी शासन के अत्याचार, सामाजिक दासता और राष्ट्रीय स्वाभिमान की भावना ने उनके साहित्य को गहराई से प्रभावित किया। उन्होंने प्रत्यक्ष राजनीतिक नारों की अपेक्षा सांस्कृतिक और नैतिक चेतना के माध्यम से राष्ट्रीय जागरण का कार्य किया। उनकी कालजयी कविता "राम की शक्ति पूजा" केवल धार्मिक कथा का पुनर्पाठ नहीं है, बल्कि वह संघर्ष, आत्मविश्वास और अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध का महाकाव्यात्मक प्रतीक है। इस कविता में राम का चरित्र उस संघर्षशील मनुष्य का प्रतीक बन जाता है जो कठिन परिस्थितियों में भी पराजय स्वीकार नहीं करता। यह कविता भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के समय राष्ट्रीय आत्मविश्वास और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की प्रेरणा बनकर उभरी। निराला ने यह स्थापित किया कि विजय केवल बाहुबल से नहीं, बल्कि आत्मबल, धैर्य और नैतिक शक्ति से प्राप्त होती है।

साहित्यिक विद्रोह और मुक्तछंद की स्थापना

निराला का सबसे महत्वपूर्ण योगदान हिंदी कविता की अभिव्यक्ति को नई दिशा देना है। उन्होंने परंपरागत छंदों और अलंकारिक भाषा की सीमाओं को तोड़ते हुए मुक्तछंद को प्रतिष्ठा प्रदान की। उस समय जब अधिकांश कवि पारंपरिक छंदों का अनुसरण कर रहे थे, निराला ने भाषा और शिल्प में नवीन प्रयोग किए। प्रारंभ में उनके इस प्रयोग का विरोध भी हुआ, किंतु बाद में यही शैली आधुनिक हिंदी कविता की प्रमुख पहचान बन गई। उनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ होते हुए भी जीवन के यथार्थ से जुड़ी हुई है। उन्होंने कविता को कृत्रिम सौंदर्य से मुक्त कर उसे मानवीय अनुभवों का माध्यम बनाया। उनके साहित्यिक विद्रोह का उद्देश्य केवल नवीनता प्राप्त करना नहीं था, बल्कि कविता को अधिक व्यापक, लोकतांत्रिक और जनसामान्य के निकट लाना था। इस दृष्टि से वे आधुनिक हिंदी कविता के सबसे बड़े प्रयोगधर्मी कवि माने जाते हैं।

मानवतावाद : निराला के विद्रोह का मूल आधार

यदि निराला के संपूर्ण साहित्य का गहन अध्ययन किया जाए तो स्पष्ट होता है कि उनके विद्रोह का अंतिम लक्ष्य मानवता की प्रतिष्ठा है। उन्होंने जिस किसी भी सामाजिक, धार्मिक अथवा साहित्यिक व्यवस्था का विरोध किया, उसका कारण यह था

कि वह व्यवस्था मनुष्य की स्वतंत्रता और गरिमा में बाधा उत्पन्न करती थी। उनके साहित्य में करुणा, प्रेम, समानता और न्याय की भावना विद्रोह का नैतिक आधार बनती है। उनके अनुसार साहित्यकार का दायित्व केवल सौंदर्य का चित्रण करना नहीं, बल्कि समाज में व्याप्त अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाना भी है। इसलिए उनके काव्य में विद्रोह और करुणा एक-दूसरे के पूरक दिखाई देते हैं। वे शोषित वर्ग के पक्ष में खड़े होकर समाज के समक्ष नई मानवीय चेतना का आदर्श प्रस्तुत करते हैं।

समकालीन संदर्भ में निराला की विद्रोही चेतना की प्रासंगिकता

इक्कीसवीं शताब्दी में विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति होने के बावजूद समाज आज भी अनेक प्रकार की असमानताओं से जूझ रहा है। आर्थिक विषमता, जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता, धार्मिक कट्टरता, बेरोज़गारी तथा श्रमिकों का शोषण जैसी समस्याएँ आज भी हमारे सामने विद्यमान हैं। ऐसे समय में निराला का साहित्य हमें यह संदेश देता है कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की शक्ति भी है। निराला की विद्रोही चेतना आज के लोकतांत्रिक समाज में समानता, सामाजिक न्याय और मानवीय अधिकारों की स्थापना के लिए प्रेरणा प्रदान करती है। उनके विचार आधुनिक भारतीय संविधान में निहित समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के आदर्शों के साथ सामंजस्य स्थापित करते हैं। यही कारण है कि उनका साहित्य समय के साथ और अधिक प्रासंगिक होता जा रहा है।

उपसंहार

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हिंदी साहित्य के ऐसे युगप्रवर्तक कवि हैं जिनकी विद्रोही चेतना ने साहित्य और समाज दोनों को नई दिशा प्रदान की। उन्होंने अपने काव्य में सामाजिक विषमता, आर्थिक शोषण, धार्मिक पाखंड, जातिगत भेदभाव, स्त्री-असमानता तथा साहित्यिक रूढ़ियों का निर्भीक विरोध किया। उनका विद्रोह किसी प्रकार की अराजकता का प्रतीक नहीं है, बल्कि वह मानवीय गरिमा, सामाजिक न्याय और लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना का सृजनात्मक प्रयास है। निराला ने यह सिद्ध किया कि साहित्य समाज का दर्पण मात्र नहीं, बल्कि उसके परिवर्तन का प्रभावशाली माध्यम भी हो सकता है। उनके काव्य में विद्रोह और करुणा का जो समन्वय दिखाई देता है, वही उनकी सबसे बड़ी विशेषता है। वे अन्याय के विरोध में जितने मुखर हैं, उतने ही मानवता के पक्षधर भी हैं। यही कारण है कि उनका साहित्य आज भी भारतीय समाज को समानता, स्वतंत्रता, न्याय और मानवीय संवेदना का संदेश देता है। आधुनिक हिंदी कविता के विकास में उनका योगदान अप्रतिम है और उनकी विद्रोही चेतना आने वाली पीढ़ियों के लिए सदैव प्रेरणास्रोत बनी रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. त्रिपाठी, सूर्यकांत. परिमल. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2018, पृ. 45–52।
2. त्रिपाठी, सूर्यकांत. अनामिका. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2019, पृ. 78–85।
3. त्रिपाठी, सूर्यकांत. गीतिका. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2017, पृ. 25–34।

4. त्रिपाठी, सूर्यकांत. कुकुरमुत्ता. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2016, पृ. 12–27।
5. त्रिपाठी, सूर्यकांत. राम की शक्ति पूजा एवं अन्य कविताएँ. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2020, पृ. 30–48।
6. शर्मा, रामविलास. निराला की साहित्य साधना (भाग–1). नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2015, पृ. 98–126।
7. शर्मा, रामविलास. निराला की साहित्य साधना (भाग–2). नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2015, पृ. 152–181।
8. शर्मा, रामविलास. निराला की साहित्य साधना (भाग–3). नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2016, पृ. 205–243।
9. सिंह, नामवर. कविता के नए प्रतिमान. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2018, पृ. 115–136।
10. वाजपेयी, नंददुलारे. आधुनिक साहित्य. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2017, पृ. 84–103।
11. द्विवेदी, हजारी प्रसाद. हिंदी साहित्य की भूमिका. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2019, पृ. 132–149।
12. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा, 2016, पृ. 298–321।
13. बच्चन सिंह. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2020, पृ. 210–238।
14. नगेंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. नई दिल्ली: मयूर पेपरबैक्स, 2018, पृ. 342–365।
15. मिश्र, विद्यानिवास. निराला का काव्य और व्यक्तित्व. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2017, पृ. 56–79।
16. गुप्त, गणपतिचंद्र. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2018, पृ. 401–425।
17. वर्मा, लक्ष्मीकांत. निराला : व्यक्तित्व और कृतित्व. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2019, पृ. 61–95।
18. पाण्डेय, मैनेजर. साहित्य और इतिहास-दृष्टि. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2016, पृ. 88–110।
19. चतुर्वेदी, रामस्वरूप. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2015, पृ. 174–196।
20. सिंह, बच्चन. छायावाद और उसके कवि. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2017, पृ. 91–118।
21. मिश्र, शिवकुमार. आधुनिक कविता और निराला. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2018, पृ. 102–129।
22. तिवारी, विश्वनाथ प्रसाद. आधुनिक हिंदी कविता. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2019, पृ. 183–205।
23. सिंह, विजय बहादुर. निराला : रचना और विचार. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2018, पृ. 57–88।
24. भारतीय ज्ञानपीठ (सं.). निराला रचनावली, खंड–1. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2015, पृ. 1–220।

25. भारतीय ज्ञानपीठ (सं.). निराला रचनावली, खंड–2. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2015, पृ. 221–468।
26. अवस्थी, देवीशंकर. आधुनिक हिंदी आलोचना. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2017, पृ. 140–166।
27. सिंह, रामविलास. हिंदी नवजागरण और निराला. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2016, पृ. 52–94।
28. पाण्डेय, राजेन्द्र. निराला का साहित्य और युगबोध. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2018, पृ. 73–108।
29. मिश्र, रमेशचंद्र. निराला का काव्य-सौन्दर्य. इलाहाबाद: साहित्य भंडार, 2017, पृ. 115–147।
30. शुक्ल, शिवकुमार. आधुनिक हिंदी काव्य की प्रवृत्तियाँ. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2019, पृ. 98–126।